वैदिक-प्रार्थना

The Vedic Prayer.

भवानी दयाल संन्यासी
BAWANI DAYAL SANNYASI

दक्षिण अफ़्रीका के सत्याग्रह का इतिहास

(लेखक–श्रीस्वामी भवानी दयालजी)

हिन्दी साहित्य में अद्वितीय ग्रंथ। सत्याग्रह का प्रथम और प्रामाणिक इतिहास। बत्तीस चित्रों से सुशोभित सुन्दर, सजिल्द और नेत्ररंजक। हिन्दुस्थान में सत्याग्रह के सिद्धान्त का अग्रदूत। दुर्लभ और अप्राप्य। एक मित्र की कृपा से कुछ प्रतियाँ मिली हैं और केवल एक दर्जन प्रतियाँ बिकाऊ हैं। इस की प्रशंसा करना व्यर्थ है–भारत के सारे अखबारोंने मुक्तकण्ठ से इस का बखान किया था। सन् १९२० में प्रकाशित यह द्वितीय संस्करण है और स्वामीजी की पहली तथा अमर कृति है। मूल्य केवल ७ शिलिंग। शीघ्रता कीजिये अन्यथा पछताना पड़ेगा। इसका नवीन संस्करण निकलने की अब कोई आशा नहीं है। मिलनेका पाता—

THE VEDIC PRAYER

(Vedic hymns with Hindi verses & English translation)

BY

BHAWANI DAYAL SANNYASI

PUBLISHED BY

R. B. DAYAL,

"BHAWANI—BHAWAN"

JACOBS, NATAL, SOUTH AFRICA,

1940

[*Third Edition*

॥ ॐ ॥

वैदिक प्रार्थना

लेखक—

श्री भवानीदयाल संन्यासी

प्रकाशक—

रामदत्त भवानी दयाल, "भवानी-भवन"
जेकब्स, नेटाल, दक्षिण अफ्रिका।
सन् १९४० ईस्वी।
(तृतीय संस्करण)

बाबू मथुराप्रसाद शिवहरे के प्रबन्ध से
दी फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में मुद्रित

शुभ कामना

भक्ति-भाव से भरी धर्म की धारा है यह ।
भ्रान्त जनों के लिए सुबोध सहारा है यह ॥
जन्म-भूमि की ज्योति जगाने वाली है यह ।
सेवा का सन्मार्ग सुझाने वाली है यह ॥
प्रिय, पढ़िए "वैदिक प्रार्थना",
तम-तामस खो जायगा ।
दुर्भाव-द्वेष सो जायगा,
शुद्ध हृदय हो जायगा ॥

आगरा
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी,
१६६०

हरिशङ्कर शर्मा,
(आर्य्यमित्र-सम्पादक).



स्वर्गीया श्रीमती दौलती देवी ।

जिनकी स्मृति में उनके पुत्रों द्वारा "वैदिक प्रार्थना"
की ५०० प्रतियां प्रवासी विद्यार्थियों
में विना मूल्य वितरित

२९ आर्यन रोड, मेविल, डरबन,

नेटाल, दक्षिण अफ्रिका निवासी श्री बी.

बेचू, श्री बी. गोविन्द, श्री बी गणपत

और श्री बी. धनी की ओर से

उनकी स्वर्गीया माता श्रीमती

दौलती देवी की पुण्य स्मृति

में

"वैदिक-प्रार्थना"

की पांच सौ प्रतियां प्रवासी विद्यार्थियों

में विना मूल्य वितरण ।

ओ३म्

निवेदन

'वैदिक प्रार्थना' की यह तीसरी आवृत्ति है। इसकी पहली आवृत्ति सन् १९३३ में निकली थी और दूसरी आवृत्ति सन् १९३४ में। एक वार यह गुजराती लिपि में भी छप चुकी है। यही इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। यहां इस बात को मैं दोहरा देना चाहता हूँ कि मैं न कोई कवि हूँ, न काव्यकला का मर्मज्ञ और न भाषा-विज्ञान का पण्डित। इसलिये मेरी तुक-बन्दियों में कवित्व की झलक देखने की इच्छा रखनेवाले को अवश्य निराश होना पड़ेगा। इसमें न भाषा की भव्यता है और न भावों की उड़ान; यह तो एक भक्त के हृदय का उद्‌गार है। और इसकी सृष्टि हुई है प्रवासी हिन्दुस्थानियों में वैदिक प्रार्थना के प्रचार की दृष्टि से।

'शुभ-कामना' के लिये कविरत्न पं० हरिशंकर शर्मा का कृतज्ञ हूँ और पुस्तिका के प्रेमपूर्वक मुद्रण के लिये मित्रवर श्री मथुरा प्रसादजी शिवहरे का भी। मेविल डरबन निवासी भाई श्री बी० बेचू ने अपनी स्वर्गीय माता की स्मृति में इसकी पांच सौ प्रतियां प्रवासी विद्यार्थियों में विना मूल्य वितरण करने का निश्चय किया है तदर्थ मैं उनका भी आभारी हूँ। आशा है कि इस संस्करण का भी प्रवासी हिन्दुस्थानियों में पूर्ववत् आदर और प्रचार होगा।

भवानी-भवन
जेकब्स, नेटाल,
दक्षिण अफ्रिका,
दिवाली १९३९

भवानीदयाल संन्यासी

-*-:o:-*-



श्री स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

परिचय

(१)

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी का नाम देश-देशान्तर में भलीभाँति प्रसिद्ध है। इसका एकमात्र कारण यह है कि उनके जीवन का प्रत्येक क्षण लोक-सेवा में ही व्यतीत होता है। उन्होंने अपनी मुक्ति के लिये संन्यास नहीं ग्रहण किया, स्वदेश-बंधुओं की मुक्ति के लिये ही सांसारिक सुखों का त्याग किया—चाहे वे देशबंधु स्वदेश में बसते हों, या विदेश में; भारत में हों, या भू मंडल के विभिन्न भागों में। आपकी सेवाएँ केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक क्षेत्र में भी आपकी सेवाएं स्तुत्य हैं। आपके आदर्श जीवन की यह चौमुखी प्रगति वास्तव में अतुलनीय है।

[२]

बिहार प्रांत के शाहाबाद ज़िले में ससराम सब-डिवीज़न के अंदर बहुआरा एक गाँव है। मुग़लसराय से गया जानेवाली ग्रैंडकॉर्ड-लाइन (ई० आई० आर०) के कुदरा स्टेशन से गाँव लगभग पाँच-छः मील उत्तर है। सन् १९२७ में २२ जून को मैं आपके दर्शन के लिये बहुआरा गया था। उस यात्रा का सचित्र विवरण मैंने संवत् १९८४ के श्रावण के 'बालक' में लिखा था। किन्तु इस दर्शन के पूर्व ही से, जब १९१२ में आपने जेकब्स (नेटाल) से 'हिंदी' साप्ताहिक निकाला था, मैं आपसे परिचित था।

उपर्युक्त बहुआरा-ग्राम से ही आपके पिता बाबू जयरामसिंह कुली-प्रथा के शिकार होकर दक्षिण-अफ्रिका चले गए थे। वहाँ उन्होंने अपनी श्रमशीलता और सदाचारिता से प्रचुर द्रव्योपार्जन किया, साथ ही अपने सद्गुणों के प्रभाव से स्वदेश-

वासियों में ऐसे सर्व-प्रिय हो गए कि ट्रांसवाल इंडियन-एसोसिएशन के सभापति निर्वाचित हुए, तथा कर्म-वीर गांधी के विश्वसनीय बंधु प्रमाणित होकर इति-हास के पृष्ठों में अमर बन गए।

आपकी माता श्रीमती मोहिनीदेवी, जिनका मातृगृह युक्त प्रांत में अयोध्या के निकट था, तथा जो परम सुंदरी और पति-भक्ति-परायणा थीं, अपने पतिदेव के साथ ही दक्षिण-अफ्रिका चली गई थीं। इसलिये आपका शुभ जन्म दक्षिण-अफ्रिका के सुप्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ठ नगर जोहांसबर्ग में, सन् १८९२ ई० की १०वीं सितंबर को हुआ। यही नगर महात्मा गांधी के सत्याग्रह का भी जन्म-स्थान है।

आपकी शिक्षा भी जोहांसबर्ग में ही हुई। वहाँ के सेंट सिप्रियन और वेस्लन मेथोडिस्ट स्कूल में आपने अँगरेज़ी की तथा पंडित आत्मारामजी गुजराती की पाठशाला में हिन्दी की शिक्षा प्राप्त

की। किन्तु स्कूल की पढ़ाई से आपने कोई प्रमाण-पत्र नहीं प्राप्त किया; केवल स्वाध्याय के बल से आपने अपनी योग्यता इतनी बढ़ा ली कि आज तक आपका जीवन निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जा रहा है।

[३]

सन् १९०४ ई० में अपने पिताजी के साथ आप भारत में पहलेपहल आए। आपकी माताजी का देहान्त सन् १८९९ में ही हो चुका था। आपके पिताजी ने अपने जन्म-स्थान—बहुआरा गाँव—को ख़रीद लिया। पड़ोस के गाँवों—इस्माइलपुर और तेंदुनी का भी कुछ भाग ख़रीदा। इस तरह उन्होंने एक छोटी-सी अच्छी ज़मींदारी का स्वामित्व प्राप्त करके आस-पास के गाँवों में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर ली। आपने यहाँ आने पर गाँव में ही हिन्दी का अभ्यास किया। विदेश में जन्म होने पर भी भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी का बीज आपके हृदय में

वर्तमान था; क्योंकि अफ्रिका में भी घर पर माता-पिता से हिन्दी में बातें करने का अभ्यास हो चुका था। हिन्दी का वह बीज भारत का अनुकूल वायु-मंडल पाकर पल्लवित होने लगा।

सन् १९०५ में बंग-भंग के प्रबल आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। उसी समय आपके हृदय में देश-वासे की लगन पैदा हुई। गाँव में एक राष्ट्रीय पाठशाला खोलकर आप देहाती बच्चों को विना फ़ीस पढ़ाने लगे। आंदोलन सम्बन्धी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ आप सदा पढ़ा करते थे। परिणाम यह हुआ कि गांवों में, बाज़ारों में, मेलों में आप स्वदेशी प्रचार पर व्याख्यान देते फिरने लगे। उसी दौरे में आपको देहात की पुरानी रूढ़ियों से बड़ी घृणा हुई

सन् १९०९ ई० में आप आर्य-समाजी बन गए। आपने बहुआरा गाँव में भी आय-समाज खोला। गाँववालों ने आपको ही सभा का प्रधान बनाया।

फिर आपने वहाँ एक वैदिक पाठशाला भी खोली। इसके बाद आपके ही उद्योग से ससराम शहर में भी आर्य-समाज की स्थापना हुई। समाज की इन सेवाओं के फल-स्वरूप आप १९११ में बिहार की आर्य-प्रतिनिधि-सभा के अवैतनिक उपदेशक बनाए गए। उसी समय पटना से निकलनेवाले 'आर्यावर्त' नामक मासिक पत्र के सहकारी संपादक भी नियुक्त हुए।

आपका विवाह १९०८ में ही, शाहाबाद ज़िले के सखरा गाँव में, हो चुका था। आपकी पत्नी श्रीमती जगरानीदेवी अपढ़ थीं, पर आपने स्वयं उन्हें शिक्षा देकर अपने काम के योग्य बना लिया। देवीजी आगे चलकर आपके सार्वजनिक जीवन में बहुत बड़ी सहायिका सिद्ध हुईं।

सन् १९११ के जून में, आपके पिताजी का देहांत होने पर, ऐसा गृह-कलह उठ खड़ा हुआ कि आपके चित्त में घोर विरक्ति उत्पन्न हो गई।

आपके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था, जिससे एक पुत्री थी, और एक पुत्र। आपकी विधवा विमाता ने संपत्ति के बटवारे का झगड़ा उठाया। आपके पिताजी वसीयतनामा लिख गए थे, जिससे झगड़े की कोई आशंका न थी। फिर भी आपने विमाता से विवाद नहीं किया, केवल अपने निर्वाह के लिये थोड़ी संपत्ति लेकर शेष सारी संपत्ति विमाता को सौंप दी। इसके बाद अपनी पत्नी और अनुज श्रीदेवीदयालजी के साथ दक्षिण-अफ्रिका चले गए। यह दिसंबर, १९१२ की बात है।

दिसंबर के अंतिम सप्ताह में आप सपरिवार 'डरबन' पहुँचे। चार दिन आप लोग जहाज़ पर ही क़ैदियों की तरह बंदी रहे। अंत में भारत लौट जाने का नादिरशाही हुक्म मिला। तब महात्मा गांधी की प्रेरणा से पोलक साहब ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाया। वहाँ से

आदेश मिलने पर इमिग्रेशन-अफ़सर ने, एक पारसी सज्जन रुस्तमजी से १०० पौंड की ज़मानत लेकर, आप लोगों को जहाज़ से उतरने दिया। सुप्रीम कोर्ट ने चौदह दिनों के अंदर प्रवासाधिकार सिद्ध करने का अवसर दिया था। पर इस अत्यल्प अवधि के अंदर कुछ भी न हो सका। अतएव आप लोग नेटाल-प्रांत के प्रधान नगर डरबन से ट्रांसवाल की ओर चल पड़े। वहाँ की सीमा पर वालकरस्ट में आप लोग पकड़े गए, मैजिस्ट्रेट के सामने मामला चला; आख़िर प्रवासी भारत-वासियों के हितैषी पोलक साहब की ज़मानत पर छूटकर आप लोग ट्रांसवाल में प्रवेश कर सके। इस के बाद फिर प्रिटोरिया की अदालत में भी मामला चला, किन्तु सरकार ने मुक़द्दमा उठा लिया, और आपको प्रवासाधिकार प्राप्त हो गया।

जर्मिस्टन नगर के नवयुवकों ने 'इंडियन यंगमैंस एसोसिएशन' स्थापित कर आपको ही उसका अध्यक्ष

बनाया। यह १९१३ की घटना है। और, इसी साल महात्मा गांधी ने सत्याग्रह-संग्राम की घोषणा की—विशेषतः भारतीय श्रमजीवियों पर लगे हुए तीन पौंड सालाना टैक्स को रद्द कराने के लिये। आपकी वीर पत्नी सत्याग्रह की लड़ाई में शामिल हो गईं। जब 'ऑरेंज-फ़्री-स्टेट' की सीमा पर देवीजी गिरफ़्तार न हुईं, तब नेटाल की ओर बढ़ीं। इधर आपने जर्मिस्टन में सत्याग्रह छेड़ा था; पर केवल छः घंटे जेल में रखकर आप छोड़ दिए गए। छूटते ही आप अपनी पत्नी के युद्ध-पथ के पथिक हुए। दस सत्याग्रही महिलाओं और श्रीथंबी नायडू आदि कई सत्याग्रही पुरुषों के साथ आपने नेटाल की सीमा पार की।

इसके बाद आपने न्युकास्ल पहुंचकर उस देश-व्यापी हड़ताल का श्रीगणेश किया, जो दक्षिण-अफ्रिका के इतिहास में एक अमर अध्याय है। उस हड़ताल में लगभग पचीस हज़ार हिन्दोस्तानी मज़-

दूरों ने भाग लिया था, जिनमें से दस हज़ार जेल भी गए थे। आपको और आपकी पत्नी को तीन-तीन महीने का कठोर कारादंड मिला। उस समय देवीजी की गोद में सवा साल का बच्चा भी था। पति पत्नी ने न्युकास्ल, पिटरमेरीत्सबर्ग और डरबन की जेलों में क़ैद की अवधि बिताई। इसी बीच कुछ शिकायतें दूर कराने के लिये आप लोगों को भूख-हड़ताल भी करनी पड़ी थी।

कारा-मुक्त होने पर, सन् १९१४ में, आप महात्मा गांधी के अख़बार 'इंडियन ओपिनियन' के हिन्दी-विभाग के संपादक हुए। उस समय इस पत्र के संपादकीय विभाग में स्वयं महात्मा गांधी और प्रसिद्ध बैरिस्टर पोलक साहब भी थे। पर जब महात्माजी ने दक्षिण अफ़्रिका से स्वदेश की ओर प्रस्थान किया, तब आपका इस पत्र से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

महात्माजी के भारत चले आने पर, सन् १९१४

में, आपने जर्मिस्टन में 'ट्रांसवाल-हिन्दी-प्रचारिणी सभा' स्थापित की। साथ ही एक हिन्दी-रात्रि-पाठशाला और एक हिन्दी-फुटबॉल क्लब भी खोला। इस तरह आपने प्रवासी भारतवासी भाइयों में हिंदी-हिंदू-हिंदुस्थान' का भाव जगाकर भारतीयता को पुष्ट किया। फिर अगले ही साल, १९१५ में, आपने नेटाल-प्रान्त में भी हिन्दी-प्रचार का कार्यारम्भ किया—न्युकास्ल, डेनहौसर, ग्लंको, हार्टिंगस्प्रुट, बर्नसाइड, लेडीस्मिथ, विनेन, जेकब्स आदि स्थानों में हिन्दी-प्रचारिणी सभाएँ और हिन्दी पाठशालाएँ स्थापित कीं—डरबन के निकट क्लेर-इस्टेट में एक हिन्दी-आश्रम बनाया, जिसमें पाठशाला, पुस्तकालय और छापेखाने की व्यवस्था की गई। पाठशाला में आपकी देवीजी भारतीय बच्चों को निःशुल्क हिन्दी-शिक्षा देती थीं। आपने अपना समस्त पुस्तक-संग्रह पुस्तकालय को दे डाला। यहाँ तक कि आपने 'दक्षिण-आफ्रिका-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' भी स्थापित किया,

जिसका प्रथमाधिवेशन लेडीस्मिथ-नगर में और द्वितोयाधिवेशन पिटरमेरीत्सबर्ग-नगर में हुआ था।

इस प्रकार आपके सतत सदुद्योग से प्रवासी भाइयों में हिन्दी प्रम की अनुदिन अभिवृद्धि होने लगी। डरबन से 'धर्मवीर' नामक हिन्दी-साप्ताहिक निकलने लगा। सन् १९१७ और १९१८ में आपने ही बड़ी योग्यता से उसका सम्पादन किया था। सम्पादन-कार्य करते हुए आप प्रवासी भाइयों में वैदिक धर्म का प्रचार भी करते जाते थे। किन्तु पत्र के स्वामी से मतभेद होने के कारण सम्पादकत्व छोड़ देना पड़ा।

इस समय तक प्रवासी भारतवासियों में आप बहुत लोक-प्रिय हो चुके थे। आपकी सच्ची सेवा और लगन में सबकी बड़ी आस्था थी' इसलिये सन् १९१९ में आप दक्षिण अफ्रिका के प्रवासी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करने के लिये अमृतसर की कांग्रेस में भेजे गए। भारत आकर कांग्रेस

के खुले अधिवेशन में आपने प्रवासी भाइयों के दुखड़े सुनाए। उन्हीं दिनों बिजौलिया (मेवाड़) के किसानों का सत्याग्रह चल रहा था; उदयपुर-राज्य के अधिकारियों की ओर से उन पर घोर अत्याचार हो रहे थे। उसीके लिये एक जाँच-कमीशन बना। राजपूताना-मध्यभारत-सभा ने आपको भी कमीशन का सदस्य चुना। किन्तु कमीशन का कार्यारम्भ होने से पहले ही प्रजावत्सल महाराणा ने अपना ख़ास कमीशन बैठा दिया। इसलिये, १९२० में आप नेटाल लौट गए। इसी यात्रा में अपने पुत्र रामदत्त और भतीजे कृष्णदत्त को वृन्दावन के गुरुकुल में प्रविष्ट कराया।

१९२० में नेटाल पहुँचने पर आप प्रवासी भाइयों के विशेष श्रद्धा भाजन बन गए। १९२१ में आपने नेटाल-इंडियन-कांग्रेस को नव-जीवन प्रदान किया। यह संस्था मृतप्राय हो चुकी थी; पर आपने नूतन संगठन-शक्ति से इसे प्रबुद्ध किया। प्रवासी

भाइयों ने आपको ही इसका उप-सभापति बनाया, और उसी समय से अब तक आप बराबर इस पद पर बार-बार चुने जाते रहे हैं फिर आप उसके सभापति ही चुने गये।

प्रवासी भाइयों की सेवा का क्षेत्र दिन-दिन विस्तृत होने लगा। आपने एक सुसंचालित एवं सुसंपादित पत्र के अभाव का अनुभव करके डरबन के निकट जेकब्स नामक स्थान में अपनी पत्नी के नाम पर 'जगरानी-प्रेस' खोल दिया, और उसी प्रेस से, सन् १९२१ में, 'हिंदी' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला, जो अङ्गरेज़ी और हिंदी में बहुत ही सुन्दर निकलता था। 'हिंदी' के प्रकाशन से एक मास पूर्व ही आपकी पत्नी का देहान्त हो गया। फिर भी आपने आगे बढ़े हुए पग को पीछे न हटाया। हाँ, देवीजी के आग्रह, अनुरोध एवं उत्साह से ही 'हिंदी' का जन्म हुआ था, इसलिये उनकी स्मृति-रक्षा के निमित्त आपने प्रेस का नामकरण तदनुसार ही

किया। देवीजी के निधन पर पोलक साहब ने लिखा था—"वह वीरांगना और देश-सेविका थीं तथा भारत की सच्ची पुत्री।" इसी प्रकार दीनबंधु एंडरूज ने भी लिखा था—"ग़रीबों के लिये ही उनका जीवन था, और उन्हीं की सेवा करते-करते वह चल बसीं।" सचमुच जगरानीजी आदर्श पति की आदर्श पत्नी थीं।

'हिंदी' के संपादक, व्यवस्थापक, अध्यक्ष, सब कुछ आप ही थे। उसकी संपादन-शैली में आपकी साहित्यिक प्रवृत्ति एवं मनोवृत्ति की स्पष्ट छाप है। उसके अनेक विशेषांक बड़े महत्त्व के निकले थे। वैसे सर्वांग-सुन्दर विशेषांक भारत में भी बहुत ही कम साप्ताहिकों के निकले हैं। मेरे पास 'हिंदी' पत्रिका बराबर आती थी। उसके विशेषांकों को देखकर आज भी चिंता होती है कि स्वामीजी साहित्य-क्षेत्र छोड़कर किधर भटक गए। उस पत्रिका का प्रचार दक्षिण-अफ्रिका और भारतवर्ष के अति-

रिक्त केनिया, युगांडा, टंगानिका मॉरिशस, फ़िज़ी, ट्रिनिडाड, डेमरारा, सुरीनाम आदि स्थानों के प्रवासी भारतीयों में भी था। अपने समय में वह समग्र प्रवासी भारतीयों की मुखपत्रिका बन गई थी। उसके प्रकाशन में बराबर आपने घाटा ही उठाया, फिर भी चार साल तक आपने बड़े सुन्दर ढंग से उसे निकाला। उसके अंक जहाँ कहीं होंगे, आज भी आकर्षण के ही साधन प्रतीत होंगे।

जिस साल (१९११) 'हिंदी' निकली, उसी साल आपको वहाँ की इंडियन-कांग्रेस का प्रतिनिधि बनकर गया की कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिये भारत आना पड़ा। आपके ही प्रयत्न से गया कांग्रेस में वह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, जिसके अनुसार नेटाल-इंडियन कांग्रेस, ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएसन और केप ब्रिटिश इंडियन कौंसिल-नामक संस्थाएँ भारतीय कांग्रेस से संबद्ध कर ली गईं, तथा दक्षिण-अफ्रिका के

प्रवासी भारतवासियों को प्रतिवर्ष भारत की कांग्रेस में दस प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला।

पुनः, सन् १९२५ में भी, एक शिष्ट मंडल के सदस्य बनकर आप भारत आए। इसी साल दक्षिण-अफ्रिका में ऋषि दयानन्द की जन्म-शताब्दी मनाने के लिये एक कमेटी बनी थी, जिसके प्रधान आप ही चुने गए थे। लगातार सात दिनों तक बड़ी धूमधाम से शताब्दि-जयन्ती-महोत्सव होता रहा। इसी अवसर पर नेटाल-आर्य-प्रतिनिधि-सभा की स्थापना हुई, और इसके अध्यक्ष भी आप ही निर्वाचित हुए। लेडीस्मिथ-नगर में वैदिक परिषद् भी आपके ही सभापतित्व में हुई। इन शुभ कार्यों को संपन्न करके शीघ्र ही आपको भारत की यात्रा करनी पड़ी; क्योंकि १९२५ में ही यूनियन पार्लियामेंट में प्रवासी भारतवासियों के विरुद्ध 'एशियाटिक बिल' पेश किया गया, जिसका

उद्देश्य यह था कि गोरों से भारतीयों की बस्ती बिलकुल अलग बसाई जाय। आपने भारतीयों को अछूत बनानेवाले इस अपमान-जनक क़ानून के विरुद्ध घोर आन्दोलन खड़ा किया - नेटाल-इंडियन कांग्रेस की ओर से संपूर्ण नेटाल में सभाएँ हुईं, और सब में आपके ओजस्वी व्याख्यान हुए। साउथ-अफ्रिकन-इंडियन-कांग्रेस की ओर से केप-टाउन में एक सभा हुई, जिसमें भारत भेजने के लिये एक डेपुटेशन (शिष्ट मंडल) बनाया गया। उसमें केप, ट्रांसवाल और नेटाल की ओर से सात सदस्य चुने गए, जिनमें एक आप भी थे। १९२५ के दिसंबर में कलकत्ता पहुँचकर, आप लोगों ने लॉर्ड रीडिंग से भेंट करके अपना वक्तव्य पेश किया। उस समय मैं 'मतवाला-मंडल' में था; आपका शिष्ट-मंडल कॉन्टिनेन्टल होटल में ठहरा था, इसलिये बराबर भेंट होती रही।

उसी यात्रा में आप कानपुर की कांग्रेस में

शामिल हुए थे। वहाँ आपने प्रवासी भाइयों के प्रश्न को राष्ट्रीय महासभा के सामने रक्खा, जिससे भारत भर में यह चर्चा फैल गई, और इस भारत-व्यापी आंदोलन का परिणाम यह हुआ कि उक्त बिल किसी प्रकार क़ानून का रूप न ग्रहण कर सका। अंततः केप टाउन में राउंडटेबल कॉन्फ्रेंस हुई—दक्षिण-अफ्रिका की सरकार के साथ भारत-सरकार का समझौता हुआ। माननीय श्रीनिवास शास्त्री भारत के प्रथम राजदूत बनकर दक्षिण-अफ्रिका गए।

इस वार की भारत यात्रा की स्मृति में आपने १९२६ में, अपने गाँव बहुआरा में, प्रवासी-भवन बनवाया। इस भवन के बनवाने में जनता से कोई सहायता नहीं ली थी, अपने पैसे से बनवाया था; पर इसमें जो पाठशाला थी, वह नेटाल के श्री ए० डुखन के ख़र्च से चलती थी। इसमें जो पुस्तकालय था, उसमें प्रवासी साहित्य का दर्शनीय संग्रह था। मैंने जून, १९२७ में प्रवासी भवन जाकर वह अपूर्व

संग्रहालय देखा था ; पर अब उसका सारा सामान दक्षिण-अफ्रिका चला गया, और वहाँ डरबन-नगर को जेकब्स पहाड़ी पर आपके पुत्र रामदत्त और ब्रह्मदत्त ने पंद्रह हज़ार रुपए लगाकर जो 'भवानी-भवन' बनवाया है, उसी में सुरक्षित है। प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध का कोई ऐसा रेकर्ड नहीं, जो उसमें न हो। प्रवासी-भवन में अख़बारों की कतरनों की सुव्यवस्थित फ़ाइलें देखकर मैं दंग रह गया। किन्तु अब वह प्रवासी-भवन भी नहीं है; क्योंकि स्वामीजी ज़मींदारी के साथ-साथ भवन भी बेचकर सदा के लिये अफ्रिका में जा बसे हैं। 'भवानी-भवन' आपके नाम पर तो बना ही है, उसमें उन सब अभिनंदन-पत्रों का भी संग्रह है, जो देश-विदेश में आपको प्राप्त हुए हैं।

हाँ, सन् १९२७ में ही, श्रीरामनवमी के दिन, आपने संन्यास ग्रहण किया, पर अपना नाम नहीं बदला ; क्योंकि पीड़ित देशबंधुओं की मोक्ष के

लिये ही गेरुआ बाना धारण किया था। अब आप सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा (दिल्ली) की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये दक्षिण-अफ़्रिका लौट गए, और दो बरसों तक वहाँ प्रचार-कार्य करते रहे—साथ-साथ कांग्रेस का काम भी होता रहा।

सन् १९२९ के अंत में आप पुनः भारत पहुँचे। उपनिवेशों से लौटे हुए प्रवासी भारतीयों की दशा की जाँच की। युक्तप्रांत, बिहार, बंगाल, मदरास, बंबई आदि प्रांतों में दौरा करके प्रवासी भाइयों की दशा अपनी आँखों देखी, और उनके संबंध में आवश्यक सामग्री भी एकत्र की। इस प्रयत्न में सफल होने के लिये आपको दस हज़ार मील की यात्रा करनी पड़ी थी। आपने एक तात्कालिक (Interim) रिपोर्ट निकालकर भारत-सरकार से प्रार्थना की कि वह एक कमीशन नियुक्त कर इस मामले की जाँच कराए। सरकार ने आपकी प्रार्थना के अनुसार माननीय श्रीनटसेन और श्रीग्रे का एक

कमीशन बिठा दिया। इसी यात्रा में आपने मद्रास में (१९२९ के अंत में ही) नेटाल-हाउस का उद्घाटन किया था। यह भवन भारत-सरकार की ओर से बना है, जिसमें लूले, लँगड़े और अपाहिज प्रवासियों को आश्रय मिलता है!

सन् १९३० में जब वेस्ट इंडीज़-द्वीप से भारतीयों को लेकर 'सतलज' जहाज़ कलकत्ता पहुंचा, तो बड़ी सनसनी फैल गई। अड़तालीस दिनों की यात्रा में चवालीस भारतीय मर चुके थे। आपने पंडित बनारसीदासजी चतुर्वेदी के साथ मिलकर देश-भर में घोर आंदोलन किया। 'सतलज' के चले जाने पर बंगाल-सरकार ने एक कमीशन चुना, जिसमें चौबीस-परगना के मैजिस्ट्रेट तथा प्रोटेक्टर ऑफ़् इमिग्रांट्स के साथ एक सदस्य आप भी चुने गए; किंतु आपने उस कमीशन में बैठना अस्वीकृत कर दिया। आपकी इस नीति का समर्थन महात्मा गांधी ने भी किया था।

उसी समय लाहौर की कांग्रेस में स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। आसेतु-हिमाचल विद्युत्प्रवाह दौड़ गया। स्वदेशोद्धार-युद्ध में आप भी सम्मिलित हो गए। बिहार को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। अपनी मातृभूमि (ज़िला शाहाबाद) के गाँव-गाँव में दौरा करके कांग्रेस का उत्साहवर्द्धक संदेश सुनाया। ज़िला कांग्रेस-कमेटी ने आपको ही अपना सभापति चुना। ज़िला-भर में जागृति की लहर उमड़ पड़ी। १२ मार्च को जब महात्मा गांधी 'डाँडी' की ऐतिसासिक यात्रा पर कूच करने लगे, आपको एक आशीर्वादात्मक तार देकर आपकी सफलता की कामना प्रकट की। किंतु मार्च (१९३०) के अंत में आप आरा स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए। उस दिन ज़िले-भर में हड़ताल मनाई गई। मामला चला। बक्सर, डुमराँव और जगदीशपुर के जोशीले व्याख्यानों पर राजद्रोह का आरोप हुआ। ढाई वर्ष का कारावास-

दंड मिला। हज़ारीबाग़ की सेंट्रल जेल में 'ए', श्रेणी में रक्खे गए। वहाँ साल-भर रहना पड़ा। वहाँ बिहार के सभी प्रमुख नेताओं और प्रसिद्ध कांग्रेस-कर्मियों का जत्था जुटा था। 'कारागार' नामक हस्त-लिखित मासिक पत्र आपके संपादकत्व में निकलने लगा।

उसके 'सत्याग्रह-विशेषांक' में बिहार के प्रत्येक ज़िले के सत्याग्रह का इतिहास दिया गया था। उसके केवल छः अंक निकले थे, जिनकी पृष्ठ संख्या ११०० थी। गांधी इरविन-समझौते के बाद जब आप लोग मुक्त हुए, तब 'कारागार' के छः अंक बिहार-विद्यापीठ (पटना) को सौंप दिये गए। संभव है, पुलिस की तलाशी में वहां से वह अमूल्य वस्तु लुप्त हो गई हो।

सन् १९३० में ही वृंदावन के गुरुकुल में प्रवासी-परिषद् हुई थी, जिसके प्रधान प्रथम अध्यक्ष आप ही चुने गए थे। आपने भाषण लिखकर

छपा भी डाला; पर ठीक उसी समय आरा में गिरफ़्तार हो गए। अतः जेल जाते समय अपने परम मित्र पंडित बनारसीदासजी चतुर्वेदी ('विशाल भारत' संपादक) को कार्य-भार सौंप दिया, जिन्होंने वहां जाकर आपका मुद्रित भाषण पढ़ा, और बड़ी योग्यता से परिषद् का संचालन किया।

उपनिवेशों से लौटे हुए प्रवासी भारतीयों के निमित्त आपके अनुरोध से सरकार ने जो कमीशन बिठाया था, उसकी रिपोर्ट असंतोष-जनक निकली। इसलिये जेल से छूटते ही आपने अपनी विस्तृत रिपोर्ट मई, १६३१ में प्रकाशित कर दी। देश-देशांतर में इस रिपोर्ट की चर्चा हुई। महात्मा गांधी और 'टाइम्स ऑफ़् इंडिया' तक ने इस पर अग्रलेख लिखा। तब आपने देश-विदेश के प्रभाव-शाली पत्रों के अग्रलेखों का संग्रह पुस्तकाकार प्रकाशित किया—Public Opinion on the

Assisted Emigration Scheme under Indo-South African Agreement. केप-टाउन की दूसरी गोलमेज़ परिषद् में इस रिपोर्ट की बड़ी चर्चा हुई, और अंत में केप टाउन-समझौते (Cape Town Agreement) से प्रत्यागमन (Repatriation) की धारा (Clause) निकाल दी गई।

सन् १९३१ में अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन कलकत्ता विश्वविद्यालय के सिनेट-हॉल में हुआ था। सौभाग्य वश मैं भी उसमें उपस्थित था। उसी अवसर पर आपकी अध्यक्षता में अखिल भारतीय हिंदी-संपादक-सम्मेलन हुआ था, जिसके स्वागताध्यक्ष थे 'विश्वमित्र' संचालक श्रीमूलचंद्रजी अग्रवाल बी० ए०। उसमें स्वनाम-धन्य बाबू राजेंद्रप्रसादजी, पंडित अंबिकाप्रसादजी वाजपेयी, पंडित कृष्णाकांतजी मालवीय, पंडित लक्ष्मणनारायण गर्दे आदि प्रतिष्ठित विद्वानों और

पत्रकारों के भाषण हुए थे। आपके ही अनुरोध से मुझे पत्रकार-सम्मेलन का मंत्रिपद ग्रहण करना पड़ा था।

सन् १९३१ में ही देवघर (वैद्यनाथधाम में) बिहार-प्रादेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का दशम अधिवेशन हुआ था। उसके अध्यक्ष आप ही चुने गए थे। उस समय बीमार रहने पर भी बिहार-रत्न राजेंद्र बाबू के अनुरोध से आपको सभापतित्व अंगीकृत करना पड़ा। आपका भाषण बड़े महत्त्व का हुआ। उस समय आप 'आर्यावर्त' नामक हिंदी-साप्ताहिक का संपादन कर रहे थे। यह पत्र बिहार की आर्य-प्रतिनिधि-सभा ने पटना से निकाला था। किंतु सन् १९३२ में आपको दक्षिण-अफ्रिका चला जाना पड़ा; इसलिये 'आर्यावर्त' अपने प्रधान संपादक के बिछुड़ते ही बंद हो गया। उधर आप फ़िज़ी द्वीप जाने की तैयारी करके जब दक्षिण अफ्रिका पहुंचे तब फ़िज़ी के गवर्नर ने दक्षिण अफ्रिका के गवर्नर-जनरल को तार देकर आपका फ़िज़ीवाला पासपोर्ट रद्द करा दिया। फ़िज़ी और भारत की

कौंसिलों तथा देश-विदेश के पत्रों में इस प्रवेश-निषेध की बड़ी गरम चर्चा रही, पर फ़िज़ी की सरकार टस से मस न हुई। इसमें सबसे बड़ा विस्मयजनक कारण यह हुआ कि शाहाबाद के मैजिस्ट्रेट के सामने आपने राजद्रोह के अभियोग में जो बयान दिया था, जिसकी चर्चा पहले हो चुकी है, उसे फ़िज़ी के 'पैसफ़िक प्रेस' नामक अख़बार ने अविकल छाप डाला था। फ़िज़ी की कौंसिल में भी उस बयान की चर्चा हुई, और उसी के कारण वहाँ प्रेस-ऐक्ट भी पास हुआ।

सन् १९२२ में, जब दूसरी बार आप नेटाल की आर्य-प्रतिनिधि के प्रधान चुने गए, आपने पूर्ववत् आर्य-धर्म की सोत्साह सेवा की। उसी समय आपकी ही अध्यक्षता में, वहाँ 'दयानंद-निर्वाण-अर्द्धशताब्दी' मनाई गई। नेटाल-भर में यह महोत्सव बड़े समारोह से संपन्न हुआ। संयोग-वश उसी साल दक्षिण-अफ्रिका में 'कलोनाइज़ेशन स्कीम'

का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दूसरी गोलमेज़-परिषद् (केप-टाउन) में भारत-सरकार और दक्षिण-अफ़्रिका की सरकार ने मिलकर तय किया था कि भूमंडल में कोई ऐसा उपनिवेश ढूँढ़ा जाय, जिसमें भारत की बढ़ती हुई प्रवासी प्रजा को बसाने की व्यवस्था हो सके—साथ ही यहाँ के प्रवासी भारतवासी भी देखें कि प्राप्त उपनिवेश में उनके बसने की सुविधा है या नहीं, यही स्कीम थी। दक्षिण-अफ़्रिका की भारतीय कांग्रेस ने इस योजना में योग देने का वचन भी दिया; किंतु जब कमीशन बैठा, कांग्रेस के तीन-चार सदस्यों ने विरोधियों के साथ मिल-कर अपना एक अलग दल खड़ा किया। फिर भी कांग्रेस अपने वचन पर दृढ़ रही, और आप उसी दृढ़-संकल्प दल में थे। आपने नेटाल-भर में दौरा करके कांग्रेस-पक्ष का समर्थन किया। मेरीत्सबर्ग-नगर के सिटी-हॉल में जब आप भाषण दे रहे थे, विरोधियों ने अवांछित रूप से हुल्लड़बाज़ी की। पर अंत में कांग्रेस की ही

विजय हुई—योजना का अंत हो गया, कमीशन ने कांग्रेस के मत का ही समर्थन किया।

सन् १९३४ में जब सम्राट पंचम जॉर्ज के सुपुत्र दक्षिण-अफ्रिका पधारे, भारत-सरकार के एजेंट कुँवर सर महाराजसिंह ने आपको उनसे मिलाया। यह भेंट डरबन के 'ड्रिल-हॉल' में हुई थी, जहाँ भारतीय कांग्रेस की ओर से प्रिंस को भोज दिया गया था। फिर 'डरबन' नगर के मेयर ने जिन नौ भारतीय नागरिकों को प्रिंस के स्वागत (Civic Reception) में आमंत्रित किया था, उनमें एक आप भी थे। मेयर ने ही प्रिंस से आपका प्रथम परिचय कराया। इससे स्पष्ट है कि राजा और प्रजा दोनों पक्ष के लोगों में समान भाव से आपकी प्रतिष्ठा है। सन १९३४ में ही नेटाल इंडियन कांग्रेस ने दक्षिण-अफ्रिका के गवर्नर जनरल लॉर्ड क्लारंडन को एक चाय-पार्टी दी थी, जिसमें बड़ोदा के आर्य-कन्या-महाविद्यालय की कन्याओं मे बाण द्वारा

आपके गले में पुष्प-हार पहनाकर अद्भुत हस्त-कौशल दिखाया था। सन् १९३५ में जब सम्राट पंचम जॉर्ज के शासन की रजत जयंती मनाई गई, तब डरबन-कॉरपोरेशन ने उसकी व्यवस्था के लिये भारतीयों की भी एक कमेटी बनाई थी, जिसके एक सदस्य आप भी थे। उसी साल की जनवरी में आप डरबन-नगर के 'कमिश्नर ऑफ़ ओथ्स' बनाए गये। डरबन-कॉरपोरेशन ने आपके सम्मान में एक सड़क का नाम 'दयाल रोड' रख दिया है। सन १९३८ में दाक्षिण अफ्रिका के गवर्नर जरनल ने अपनी गार्डन-पार्टी में पहले पहल दस हिन्दुस्थानियों को आमंत्रित किया था उनमें आप भी एक थे।

सन् १९३५ के अंत में 'साउथ आफ्रिकन इंडियन कांग्रेस' के प्रतिनिधि बनकर आप पुनः भारत आए। इसी यात्रा में आपने बिहार के गया-नगर में 'राजेंद्र-आश्रम' का उद्घाटन किया, और लखनऊ की कांग्रेस के खुले अधिवेशन में प्रवासी

भारतीयों की दुःख-गाथा सुनाई— भारत-सरकार के प्रतिनिधि सर जगदीशप्रसाद और सर गिरिजाशंकर वाजपेयी से मिलकर प्रवासी भारतीयों की समस्या पर दो दिन बातें कीं—महात्मा गांधी और अन्य प्रमुख भारतीय नेताओं से भी प्रवासी-समस्या पर विचार-विनिमय किया, साथ-साथ समाचार-पत्रों में आंदोलन भी। इस प्रकार अपनी यात्रा सफल करके आप सन् १९३६ में दक्षिण-आफ्रिका लौट गए, और वहाँ उक्त कांग्रेस ने एक प्रस्ताव द्वारा आपकी सफलता का अभिनन्दन किया।

इधर पाँच-छः साल से आप पोर्तुगीज़ ईस्ट अफ्रिका में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। सन् १९३७ में पूर्व-अफ्रिका के प्रधान नगर लॉरेंसो मार्क्विस में आपके ही कर-कमलों से वेद-मंदिर की आधार-शिला रक्खी गई थी। उस शिलान्यास-महोत्सव का सचित्र विवरण भारतीय हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में भी छपा था। वह वेद-मंदिर वहाँ के

भारत-समाज की संपत्ति है, और उसमें पचास हज़ार से अधिक रुपए ख़र्च हुए हैं। उसमें भारतीय बालक बालिकाओं को धार्मिक और सास्कृतिक शिक्षा भी दी जाती है।

सन् १९३८ में आप नेटाल इंडियन काँग्रेस के सभापति चुने गये। नेटाल के इतिहास में यह पहला ही अवसर था कि काँग्रेस का प्रधान एक हिन्दू चुना गया। सन् १८९४ में महात्मा गांधी ने उस काँग्रेस की स्थापना की थी। तबसे अबतक कोई हिन्दू इस पद पर प्रतिष्ठित नहीं हुआ था। आपके सभापतित्व के साथ ही जागृति-युग का नेटाल में सुप्रभात हुआ। आपके उद्योग से काँग्रेस की पुरानी शाखाओं का पुनर्सङ्गठन हुआ और नवीन शाखाओं की स्थापना भी। काँग्रेस के पांच हजार से अधिक सदस्य बने। काँग्रेस के द्वारा वृद्ध और अपाहजों को सरकारी पेन्शन मिलने लगी, विधवाओं और अनाथ बच्चों के लिये भी सहायता की समुचित व्यवस्था हुई।

इसी साल की दिसम्बर में नेटाल इंडियन कॉंग्रेस की ओर से हिन्दुस्थानियों की पहली परिषद् हुई और आपकी अध्यक्षता में कई महत्वपूर्ण प्रश्नो पर विचार हुए। सारे प्रदेश में कॉंग्रेस की धाक जम गई।

सन् १९३९ के फरवरी में सरकार के पृथक्करण कानून Segregation Bill के विरोध में भारत सरकार को सचेत करने तथा भारतीय लोकमत जागृत करने के लिये आपको कॉंग्रेस का एकमात्र प्रतिनिधि चुनकर स्वदेश भेजा गया। यहां आकर आपने ऐसा घोर आन्दोलन किया कि भारत का लोकमत क्रोध और ग्लानि से प्रक्षुब्ध हो उठा। सारे देश ने दक्षिण अफ्रिका सरकार की नीति की निन्दा की। हिन्दुस्थान में पांच मास काम करके आप सितम्बर में दक्षिण अफ्रिका लौट गये। वहां की कॉंग्रेस ने "पेवेलियन" की विराट सभा में आपको अभिनन्दन पत्र देकर कृतज्ञता का भाव प्रकट किया। आपकी

अनुपस्थिति में वहां कुछ ऐसी घटनाएं हो गईं जिससे खिन्न होकर आपने वहां के राजनीतिक क्षेत्र से अलग हो जाने का विचार कर लिया है।

आपने हिन्दी और अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं और उनका जनता में यथेष्ट आदर हुआ है। हिन्दी में आपकी और आपकी सहधर्मिणी की एक छोटीसी जीवनी बहुत दिन पहले निकली थी जो अब अप्राप्य है। इधर 'अजीतमल' (इटावा) से 'इंडियन कलोनियल एसोसियेशन' से अंग्रेजी में आपकी एक बृहद् जीवनी प्रकाशित हुई है, जिसके सुयोग्य लेखक हैं—श्री प्रेमनारायणजी अग्रवाल, एम० ए०। हाल ही में आपकी आत्मकथा भी हिन्दी में कलकत्ता पुस्तक भंडार द्वारा प्रकाशित हुई है। इसकी भूमिका लिखी है—राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजी ने और लेखबद्ध किया है हिन्दी में अनेक पुस्तकों के रचयिता—ठाकुर राजबहादुर सिंह ने। यह हिन्दी साहित्य की स्थायी सम्पत्ति है।

अंत में यह बतला देना अप्रासंगिक न होगा कि मैं भी शाहाबाद जिले का ही रहने वाला हूँ जो स्वामीजी की पैत्रिक भूमि है। मेरे संग्रहालय में आपकी सैकड़ों चिट्ठियाँ और आपके सार्वजनिक कार्यों के अनेक मुद्रित विवरण संगृहीत हैं जिनमें अखबारों की कतरनें भी काफ़ी हैं। उन सब के आधार पर स्वामीजी का एक संस्मरण कभी लिखा जायगा। मेरा अनुभव है, सार्वजनिक नेताओं की सच्ची जीवनी अखबारों की कतरनों से ही तैयार हो सकती है।

'बालक' कार्यालय
लहेरियासराय (बिहार)
हिन्दुस्थान

—शिवपूजन सहाय

॥ ओ३म् ॥

वैदिक सन्ध्या

आचमन

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥

देवी-स्वरूप ईश्वर, पूरण अभीष्ट कीजे ।
यह नीर हो सुधामय, कल्याण-दान दीजे ॥

Meditation

May the all pervading Divine Mother be gracious enough to gratify our inner craving, and send down blessings all around us !

इन्द्रिय स्पर्श

ओम् वाक् वाक् । ओम् प्राणः प्राणः । ओम् चक्षुः चक्षुः । ओम् श्रोत्रं श्रोत्रम् । ओम् नाभिः । ओम् हृदयम् । ओम् कण्ठः । ओम् शिरः । ओम् बाहुभ्यां यशोबलम् । ओम् करतलकरपृष्ठे ॥

तन मन वचन से होंगे हम शुद्ध कर्मकारी ।
दुष्कर्म से बचेंगी ये इन्द्रियां हमारी ॥
वाणी मधुर मनोहर, प्रिय प्राण शक्तिशाली ।
होंगी हमारी आँखें सुर दिव्य ज्योति वाली ॥
होंगे ये कान निर्मल, नाभी विमल सुखारी ।
होगा हृदय, दयामय ! यह शुद्ध शांतिकारी ॥
तेरे गुणों की गाथा गावेगा कण्ठ मेरा ।
शिर में रमेगा केवल गौरव अनन्त तेरा ॥
होंगे ये हाथ मेरे बल-कीर्त्ति के पुजारी ।
मेरी हथेलियां ये होंगी पवित्र प्यारी ॥

Covenant

O God ! Most sincerely and solemnly, I make a covenant with Thee that knowingly I shall never sin with my organs; 5 cognitive and 5 active senses; *v z*,, the tounge—taste, the nose—smell, the eye—sight, the ear—hearing, the palm (membrane) and its back epidermis touch, the genitals—passions, the heart—desire, the throat—speech, the head—thought, the hands—deed.

मार्जन

ओम् भूः पुनातु शिरसि। ओम् भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओम् स्वः पुनातु कण्ठे। ओम् महः पुनातु हृदये। ओम् जनः पुनातु

नाभ्याम् । ओम् तपः पुनातु पादयोः । ओम् सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि । ओम् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

जीवन स्वरूप भगवन् ! मस्तक पवित्र करदो ॥
पावन पिता ! दयाकर आँखों में ज्योति भरदो ।
आनन्द-कन्द ईश्वर ! हम को सुकण्ठ दीजे ॥
सर्वेश ! मेरे उर में बसकर पुनीत कीजे ।
जग के जनक ! हमारी हो नाभि निर्विकारी ॥
पद भी पवित्र होवें, हे ज्ञान-ज्योतिधारी ! ॥
फिर भी पवित्र सिर हो, हे सत्य-रूप स्वामी ! ।
सब अङ्ग शुद्ध होवें, व्यापक विभो ! नमामी ॥

Divine Grace

But O Lord ! I am weak and so depend upon Thee. Purify and so strengthen my senses Thyself.

May the Living God purify the head ! May the Holy God purify the eyes ! May the Happy God purify the throat ! May the Great God purify the heart ! May the Common Father purify the genitals or animal propensities ! May the All-wise God purify the feet ! May the Eternal God again purify the brain ! May the All-pervading God purify all places !

प्राणायाम

ओम् भूः । ओम् भुवः । ओम् स्वः । ओम् महः । ओम् जनः । ओम् तपः । ओम् सत्यम् ॥

हे प्राणनाथ ! प्रभुवर ! पावन पवित्र त्राता ।
आनन्द-कन्द तू है, सब से महान ज्ञाता ॥

जग का तुही जनक है, हे ज्ञान-ज्योतिदाता।
तूही अजर अमर है, तू सत्य शिव कहाता॥

Control of Breath

O God of life ! O God of holiness
O God of happiness ! O Great God !
O God the Father ! O God of wisdom !
O God of truth !

अघमर्षण

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्य जायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीञ्चान्तरिक्ष-मथो स्वः॥

तू विश्व का विधाता, सब का तुही सहारा।
सागर की सृष्टि कर दी, भर दी अटूट धारा॥
पहले के कल्प जैसे रवि-चन्द्र को बनाया।
दिन-रात के सहारे संवत् सुकाल लाया॥
द्यौ, अन्तरिक्ष, धरणी, विधिवत् सभी सजाये।
तू रम रहा है सब में तुझ में सभी समाये।

Contemplation of God's Power in Genesis

Principles and atoms were produced from the pregnant Nature, then came out chaos, then energy of motion, then ocean.

After the energy and the ocean came out the planetary motion. The Ruler of the universe made days and nights without effort,

The maker formed, as before, the sun and moon, the luminous and opaque bodies, the firmament and the happy region.

मनसा-परिक्रमा

ओम् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

हे ज्ञानमय अगोचर ! बन्धन में तू न आता ।
प्राची में रम रहा है रक्षक पिता कहाता ॥
आदित्य-रश्मियों से जीवन विकास पाता ।
अज्ञान के अन्धेरे से तू हमें बचाता ॥
मैं बार बार, भगवन् ! करता तुम्हें नमस्ते ।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ हस्ते ॥

Mental Circumambulation

O All-wise and Glorious Being! Thou art before us, the Absolute, our King and Protector. Thou hast made the sun, whose beams shower life on earth. We bow down to Thee in gratitude for Thy benign rule, kind protection, and blessed gift of life. For all these blessings, O God! we humbly thank Thee, and place him, who hates us, or whomever we hate at Thy disposal.

ओम् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चि-
राजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमो
ऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

तुझ को ही इन्द्र कहते दक्षिण में तू दिखाता ।
दुखदायी जन्तुओं से तू ही हमें बचाता ॥
तू ज्ञानियों के द्वारा शिक्षा-सुधा पिलाता ।
तेरे अनन्त गुणगण गाता नहीं अघाता ॥
मैं बार बार, भगवन् ! करता तुम्हें नमस्ते ।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ हस्ते ॥

O Almighty Lord, Thou art to our right, our Sovereign and Protector from a host of the invertebrata. Thou sendest wise men to teach us.

ओम् प्रतीचीदिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

पश्चिम में वास तेरा तू ही वरुण कहाता ।
विषधारियों से हम को तू ही सदा बचाता ॥

पोषण तू कर रहा है, हे देव! अन्न द्वारा।
सुख में तुझे न भूलूँ, दुख में तुही सहारा॥
मैं बार बार, भगवन्! करता तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ हस्ते॥

O Adorable Being ! Thou art behind us, our King and protector from the vertebrat, Thou createst food, which gives us life on earth.

ओम् उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

हे सोम रूप स्वामी! मानस प्रशस्त कीजे।
उत्तर में भी तुम्हीं हो यह भाव-दान दीजे॥

विद्युत की शक्तियों में गतिशीलता सुहाती।
जीवन भी ज्योति पाता यह सृष्टि जगमगाती॥
मैं बार बार, ! भगवन् करता तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ इस्से॥

O Father! Thou art to our left, our King, Self-existent, and our Protecotr. Thy electricity moves our blood to keep up our life and produces various motions in the world.

ओम् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माष-ग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमो ऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

हे विष्णु सर्वव्यापिन्! नीचे भी तुम लखाते।
फल, फूल, वृक्ष सब ही अनुराग राग गाते॥

रक्षक बना हुआ है सब भांति तू हमारा।
संसार में न कोई तेरे सिवा सहारा॥
मैं बार बार, भगवन्! करता तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ हस्ते॥

O All-pervading! Thou art below, our King, and the Nourisher of our life with arboreous trees and tuberous creepers, bearing a variety of fruits.

ओम् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमो ऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

अन्तर्-दृगों से, भगवन्! ऊपर भी दृष्टि आते।
तुम से ही वृष्टि होती सब सृष्टि को चलाते॥

सब में भरे हुए हो, तुम से न कुछ भी खाली।
सर्वत्र रम रहे हो, पावन प्रतापशाली॥
मैं बार बार, भगवन्! करता तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर निर्णय निगूढ़ हस्ते॥

O Great God! Thou art above, our King, Developer and Protector. Thou sendest down rain to water our fields, which produce food to preserve our life

---

उपस्थान

ओम् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

हे ज्ञान-भानु! तेरी ज्योती अनूप भाती।
अज्ञान की तमिस्रा तप-त्याग से नशाती॥

देवों का देव तू है, हे नाथ न्यायकारी !
तेरे गुणों को गावे रसना सदा हमारी ॥

Spiritual Vision

May we, perceiving God with all His glory, beyond the darkness of ignorance, all happy supreme over all, obtain Him, the Sun of our life and our spiritual Light.

ओम् उदु त्यं जातवेदस देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

है वेद तेरी वाणी, हे विश्व के प्रकाशक।
देवों में श्रेष्ठ तू है, अज्ञान-तम विनाशक ॥
जीवन में ज्योति तू है, बल है तू ही बदन में।
सर्वस्व जान तुझ को आया हूं मैं शरण में ॥

All the objects of the world serve the purpose of flags to show Him, the Glorious Being, the Maker of the worlds and the Vedas, and the Sun of life, to all the creatures.

ओम् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥

अद्भुत-स्वरूप तेरा, तेरी अनूप करनी।
तेरी विमल विभूती द्यौ अन्तरिक्ष धरनी ॥
तेरी अपूर्व गाथा रवि झूम-झूम गाता।
श्रद्धा की अंजली ले यह भक्त भी चढ़ाता ॥

Although all objects indicate Thee, yet, O God ! Thou art wonderous, the

Ever-wakeful Eye, and the Support of all the heavenly bodies, even the sun, the moon and fire. Thou holdest the heaven and the earth, and the firmament' Thou art the maker and the Soul of all the movable and the immovable objects. May we think, speak, and act rightly !

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

देवों के हे हितैषी ! सौ वर्ष तुम को ध्याऊँ ।
होकर शतायु स्वामिन् ! श्रद्धांजली चढ़ाऊँ ॥

सौ साल मेरी प्यारी आंखें रहें सुखारी।
ये कान भी ऋचाएँ सुनते रहें करारी॥
वाणी मधुर मनोहर बल ओज तेज धारी।
परवश न हों कभी हम, स्वाधीनता पुजारी॥
शत वर्ष के अनन्तर जीवें तो शोकहारी।
सब अंग की क्रियाएँ कायम रहें हमारी॥

That Ever-wakeful Eye exists pure from all eternity for the good of the learned. May we see a hundred autumns! May we live a hundred autumns! May we hear a hundred autumns! May we speak a hundred autumns! May we be free a hundred autumns! And again so for a hundred autumns!

गायत्री

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

परमेश प्राणदाता अद्वैत अज अनूपम् ।
अनुभव अगम्य तू है व्यापक विभू अरूपम् ॥
है 'सत्य' रूप तेरा, 'चित' ज्ञान-मूल रूपम् ।
'आनन्द'-कन्द तू ही, अश्रुत अजेय भूपम् ॥
तप - त्याग - योग द्वारा तेरा प्रसाद पाऊँ ।
फिर अन्त में भी भगवन् ? तव ज्योति में समाऊँ ॥
हे ब्रह्म ? बस यही है एक याचना हमारी ।
बुद्धी पवित्र-पावन हो ज्ञानमय सुखारी ॥

Initiatory Verse

O Lord ! O Personification of True Existence, Intelligence and Bliss ! Everlasting, Holy, All-wise, Immortal. Thou art Unborn, without any symbolical

distinction and organization, Omniscient, Sustainer and Ruler of the Universe, Creator of all, Eternal, Protector and Preserver of the Universe, O All-pervading Spirit ! O Ocean of mercy ! Thou art the Life of the Creation, Thou art an All-blissful Being, the very contemplation of Whom wipes off all our pains and sorrows, Thou art the Sustainer of the Universe, Father of all; may we contemplate Thy holy adorable nature so that Thou mayest guide our understanding Thou art our God, who alone art to be adored and worshipped. There is none beside Thee, who is equal to Thee or above Thee. Thou alone art our Father, Ruler, and Judge. Thou alone bestoweth ~~happiness~~.

Intelligence

समर्पण

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ (यजुर्वेद अ० १६ मं० ४१)

हे मङ्गलेश शङ्कर ! सादर विनय सुनाऊँ ॥
कल्याण-मार्ग द्वारा तेरे समीप आऊँ ॥

अनुराग-रस पिलादे अवढर महान दानी ।
तेरी शरण में आया है भक्त यह 'भवानी' ॥

We bow to Thee, who art All-joy, All-happiness, the Dispenser of ease and Fulfiller of our righteous desires, All-calm, and All-peace

ईश्वर-प्रार्थना

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

(यजुर्वेद अ० ३० मं० ३)

हे सर्वेश ! सकल सुखदाता, शुद्ध-स्वरूप विधाता है ।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते जो तेरे ढिग आता है ॥
विषय-वासना के विकार से हम को नाथ ! बचा लीजे ।
जग के पावन पुण्य-पदारथ प्रेम-सिन्धु हमको दीजे ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(यजुर्वेद अ० ३० मं० ३)

तू ही स्वयं-प्रकाश, सुचेतन, सुख-स्वरूप शुभ त्राता है ।
सूर्य-चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है ॥
पहिले था अब भी तू ही है घट-घट में व्यापक स्वामी ।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझ को पाऊं हे अन्तर्यामी ! ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(यजुर्वेद अ० ५५ मं० १३)

तू है आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं ।
तेरी चरण-शरण में आकर भवसागर तर जाते हैं ॥
तुझ को ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में ।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(यजुर्वेद अ० २३ मं० ३)

तूने अपनी अनुपम माया से जग-ज्योति जगाई है ।
मनुज और पशुओं को रच कर निज प्रभुता प्रगटाई है ॥
अपने हिय सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं ।
लेकर सर्व-सामग्री विधिवत् तुझ पर नाथ ! चढ़ाते हैं ॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(यजुर्वेद अ० ३१ मं० ६)

तारे, रवि, चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है !
तू है विश्व-विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें ।
भक्ति-भाव से भगवन् ! तेरे भजनामृत का पान करें ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

(ऋग्वेद मं० १० सू० १२१ मं० १०)

तुझ से भिन्न न कोई जग में, सब में तुही समाया है ।
जड़-चेतन सब तेरी रचना, तुझ में आश्रय पाया है ॥
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का तूने साज सजाया है ।
हेतु-रहित अनुराग दीजिये, यही भक्त को भाया है ॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृत-मानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥

(यजुर्वेद अ० ३२ मं० १०)

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फलदाता है ।
तूही सखा, बन्धु भी तूही, तुझ से ही नित नाता है॥
भक्तों को इस भव-बन्धन से तूही मुक्त कराता है ।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु, सर्व काल का ज्ञाता है ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराण-मेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥

(यजुर्वेद अ० ४० मं० १६)

तू है ज्ञान रूप परमेश्वर, सब का सिरजनहार तुही ।
मेरी रसना रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तुही ॥
अब अनर्थ से हमें बचाते रहना हर दम दयानिधान।
भक्त'भवानी'को हे भगवन् ! दीजे यही विशद वरदान ॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥ स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥ २ ॥ ऋ० मं० १ सू० १ मं० १, ९ ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥ ३ ॥ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥ ४ ॥ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये । देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥ ५ ॥ स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।६।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ ७ ॥

ऋ० म० ५ । ५१ ॥ मं० ११ –१५ ॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

ऋ० मं० ७ । सू० ३५ । मं० १५ ॥

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः । उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ।९।
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥ १० ॥
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥११ ॥
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे

देवासो मनुषो यति ष्ठन को वोऽध्वरं तुविजाता
अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये
॥ १२ ॥ येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः
समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः त आदित्या
अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्त सुपथा स्व-
स्तये ॥ १३ ॥ य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते नः
कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता
स्वस्तये ॥१४॥ भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहो-
मुचं सुकृतं दैव्यं जनम् । अग्निं मित्रं वरुणं
सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥ १५ ॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं
सुप्रणीतिम् । दैवीं नावं स्वरित्रामनागसम-
स्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥ १६ ॥ विश्वे
यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया
अभिह्रुतः । सत्यया वो देवहूत्या हुवेम
शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥ १७ ॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्वि-
दत्रामघायतः । आरे देवा द्वेषो अस्मद्यु-
योतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥ १८ ॥
अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते
धर्मणस्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीति-
भिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥ १९ ॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो
हिते धने । प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसि-
मरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥ २० ॥ स्वस्ति
नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्य१प्सु वृजने स्व-
र्वति । स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति
राये मरुतो दधातन ॥ २१ ॥ स्वस्तिरिद्धि
प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा
भवतु देवगोपा ॥ २२ ॥

ऋ० मं० १० । सू० ६३ मं० ३—१६ ॥

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः

सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्याय-
ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा
ऽअयक्ष्मा मा व स्तेन ऽ ईशत माघशंᳬसो ध्रुवा
ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य
पशून् पाहि ॥ २३ ॥ यजु० अ० १ । मं० १ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ-
दब्धासोऽ अपरीतासऽ उद्भिदः । देवा नो यथा
सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे
॥ २४ ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां
देवानांᳬ रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानांᳬ
सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु
जीवसे ॥ २५ ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा
वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये
॥ २६ ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति
नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरि-
ष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ २७ ॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-
भिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्य-
शेमहि देवहितं यदायुः ॥

यजु० अ० २५ । मं० १४, १५, १८, १९, २१ ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदा-
१ २ २र ३ १ २ १
तये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ २६ ॥ त्व-
२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
मग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मा-
२ ३ १ २
नुषे जने ॥ ३१ ॥ साम० पूर्वार्चिक प्रपा० १॥१-२॥

प्रथमार्ध० । द० १ । मं० १, २ ॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि
बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो ऽअद्य
दधातु मे ॥३१॥अथर्व० कां० १ । सू० १ । मं० १ ॥

इति स्वस्तिवाचनम् ॥

अथ शान्तिप्रकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रा-
वरुणा रातहव्या । शमिन्द्रासोमा सुविताय
शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥ १ ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः
शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य
शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ २ ॥
शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न
उरूची भवतु स्वधाभिः । शं रोदसी बृहती
शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु । ३ ।
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रा-
वरुणावश्विना शम् । शं नः सुकृतां सुकृतानि
सन्तु शं न इषिरोऽ अभि वातु वातः ॥ ४ ॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं
दृशये नो अस्तु । शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु
शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥ ५ ॥ शं न

इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शर्मादित्येभिर्वरुणः सुशंसः । शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्व१ः शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥ शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥ ८ ॥ शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः । शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥ ९ ॥ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः । शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं न क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥ १० ॥ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु । शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः

पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥ ११ ॥ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः । शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ १२ ॥ शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः । शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥ १३ ॥

ऋ० मं० ७ सू० ३५ । मं० १—१३ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १४ ॥ शं नो वातः पवताᳪं शं नस्तपतु सूर्यः । शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु ॥ १५ ॥ अहानि शं भवन्तु नः शᳪं रात्रीः प्रति धीयताम् । शं नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥ १६ ॥

शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ १७ ॥ द्यौः शान्तिर-
न्तरिक्षᳩं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-
रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे
देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳩं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम
शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳩं शृणुयाम
शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम
शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ १९ ॥

यजु० अ० ३६ । मं० ८ १०, ११, १२, १७ २४ ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य
तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २० ॥ येन कर्मा-
ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु
धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः

शिवसंङ्कल्पमस्तु ॥ २१ ॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऽऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु ॥ २२ ॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परि गृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु ॥२३॥ यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ २४ ॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ २५ ॥

यजु० अ० ३५ मं० १—६

१ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
२ ३ १ २
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ २६ ॥

साम० उत्तरार्चिके० प्रपा० १ । द० १ । मं० १ ॥

अभयं नः करत्यन्तरिक्ष-
मभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्ता-
दुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥ २७ ॥

अभयं मित्रादभयममित्रा-
दभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ २८ ॥

अथर्व० कां० १९ । सू० १५ । मं० ५, ६ ॥

इति शान्तिप्रकरणम्

वैदिक हवन

आचमन

निर्मल जल लेकर इन तीनों मन्त्रों से तीन आचमन करने चाहियें:—

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥

ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

अङ्ग-स्पर्श

बायीं हथेली में जल लेकर दहने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से अङ्गों का स्पर्श करना चाहिये ।

ओम् वाङ्म ऽ आस्येऽस्तु ।

इस मन्त्र से मुख,

ओम् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।

इस से नांक के दोनों छेद,

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।

इससे दोनों आँखें,

ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।

इससे दोनों कान,

ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।

इससे दोनों हाथ,

ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।

इससे दोनों जंघा का स्पर्श करे और,

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

इस से शरीर पर जल छिड़के ।

—:o:—

अग्न्याधान

इस मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित करेः—

ओम् भूर्भुवः स्वः ॥

इस मन्त्र से अग्नि को तैयार करेः—

ओम् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठे ऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

इस मन्त्र से हवन-कुण्ड के बीच में अग्नि को धर कर उस पर लकड़ी चिन देवे और यदि आवश्यक हो तो बेना या पंखा से अग्नि को प्रदीप्त करे ।

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्व-मिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

समिदाधान

चन्दन, पलाश या किसी काठ के तीन टुकड़े घी में डुबा कर अग्नि में चढ़ावे। इस मन्त्र से पहली समिधा चढ़ावेः—

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेने-ध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥ १ ॥

इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ावेः—

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयताऽतिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम ॥ २ ॥

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥ ३ ॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा चढ़ावेः—

ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयाम-सि । बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा । इदमग्नये ऽङ्गिरसे-इदं न मम ॥ ४ ॥

घृताहुति

इस मन्त्र से पांच बार घी की आहुति देवेः—

ओम् अ यं त इध्म आत्मा जातवेदस्ते-नेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम ॥

जलाञ्जलि

अंजलि में जल लेकर इस मन्त्र से वेदि के पूर्व भाग में छिड़केः—

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ।

इस से पश्चिमः—

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।

इस से उत्तरः—

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व ।

और इस से चारों ओर छिड़केः—

ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥

आघारावाज्याहुती

इस मन्त्र से यज्ञ-अग्नि के उत्तर भाग में घी की आहुति देवेः—

ओम् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ।

इस से दक्षिण-भाग मेंः—

ओम् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदं न मम ।

आज्यभागाहुती

इन दोनों मन्त्रों से यज्ञ कुण्ड के मध्य में घृत की आहुति देवेः—

ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम ॥

व्याहृति आहुति

इन मन्त्रों से चार घृताहुति देवेः—

ओम् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम ॥

ओम् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम ॥

ओम् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदं न मम ॥

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्य इदं न मम ॥

स्विष्टकृत्-होमाहुति

इस मन्त्र से घी अथवा भात की एक आहुति देवेः—

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम ॥

प्राजापत्याहुति

इस मन्त्र को मन में पढ़ कर आहुति देवे—

ओम् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम ॥

आज्याहुति

इन मन्त्रों से घी की चार आहुति देवेः—

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्ज्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम ॥ १ ॥ ओम् भूर्भुवः स्व। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम ॥ २ ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्च्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥ ३ ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम ॥ ४ ॥

अष्टाज्याहुति

इन मन्त्रों से आठ आहुति देवेः—

ओम् त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽअव यासिसीष्ठाः । याजिष्ठो व ह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् इदं न मम ॥ १ ॥ ओम् स त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती ने दिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्यां इदं न मम ॥२॥ ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युराचके स्वाहा । इदं वरुणाय इदं न मम ॥ ३ ॥ ओम् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय इदं न

मम ॥ ४ ॥ ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्य इदं न मम ॥ ५ ॥ ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्याय नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नय अयसे इदं न मम ॥ ६ ॥ ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदं न मम ॥ ७ ॥ ओम् भवतं नःसमनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्ट मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्यां इदं न मम ॥ ८ ॥

प्रातःकाल की आहुति

ओम् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।
ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥

सायंकाल की आहुति

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।

इस मन्त्र को मन में पढ़के तीसरी आहुति देवे ।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

—:०:—

दोनों काल के लिये अष्टाहुति

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इद-मग्नये प्राणाय–इदं न मम ॥ १ ॥

ओम् भुववार्यवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय–इदं न मम ॥ २ ॥

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय, व्यानाय–इदं न मम ॥ ३ ॥

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वा-दित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्य इदं न मम ॥ ४ ॥

ओम् आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥ ५ ॥

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपा-सते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ॥ ७ ॥

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥ ८ ॥

पूर्णाहुति

ओम् पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳशतक्रतो स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवाव शिष्यते स्वाहा ॥ २ ॥

ओम् सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥ ३ ॥

शेष घृत छोड़ने का मन्त्र

ओम् वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः

पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

व्रताहुति

अर्थात् व्रत धारण करने की आहुतियाँ:—

ओम् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहम-नृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमग्नये-इदं न-मम ॥ १ ॥ ओम् वायो व्रतपते व्रतं चरि-ष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्या सिमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदं वायवे-इदं न मम ॥ २ ॥ ओम् सूर्य्य व्रत-पते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छके यम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदं सूर्याय इदं न मम ॥ ३ ॥ ओम् चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि

तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्य-
मुपैमि स्वाहा । इदं चन्द्राय इदं न मम ॥४॥
ओम् व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते
प्रब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहम-
नृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमिन्द्राय व्रत-
पतये इदं न मम ॥ ५ ॥

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्य-
त्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च
शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ १ ॥

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते-
नोपनह्यामि ॥ २ ॥

पार० का० २ । २ । ११ ॥

प्रातःकाल जपने के मंत्र

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं
प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ १ ॥
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम
वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्य मन्यमानस्तुरश्चिद्-
राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥ २ ॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो
भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वै-
र्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ३ ॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामो-
त प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य
वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥ ४ ॥

भग एव भगवाँ अस्तु देवा-
स्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति
स नो भग पुरएता भवेह ॥ ५ ॥

भोजन के समय का मंत्र

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो
देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र-प्र दातारं तारिष
ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥१॥
य० अ० ११ मं० ८३ ॥

शुद्धि-मंत्र

(इन मन्त्रों को पढ़कर शुद्धि के लिये प्रस्तुत व्यक्ति पर जल छींटना चाहिये ।)

ओं पुनन्तु मा देवजनाः
पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि
जातवेदः पुनाहि मा ॥ १ ॥

ओं पवित्रेण पुनीहि मा
शुक्रेण देव दीद्यत् ।
अग्ने क्रत्वा क्रतूँरनु ॥ २ ॥

ओं यत्ते पवित्रमर्चिषि
अग्ने विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ३ ॥

ओं पवमानः सो अद्य नः
पवित्रेण विचर्षणिः ।
यः पोता स पुनातु मा ॥ ४ ॥

इसके अतिरिक्त यथाविधि यज्ञ का अनुष्ठान और गायत्री मन्त्र का उपदेश करना चाहिये ।

ईश्वरोपासना

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः
शन्नो भवत्वर्य्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः
शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥
नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि

ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि ।
तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु ।
अवतु मामवतु वक्तारम् ॥

ओं स ब्रह्मा स विष्णुः
स रुद्रस्स शिव-
स्सोऽक्षरस्स परमः स्वराट् ।
स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमाः ॥

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।
बलमसि बलं मयि धेहि
ओजोऽस्योजो मयि धेहि ।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि
सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

ओम् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्य्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीनमस्तु । मा विद्विषावहै ॥

असतो मा सद् गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदै-
र्गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा
देवाय तस्मै नमः ॥

सामवेदोक्त महावामदेव्यगान

१ २ ३१र २र
ओं भूर्भुवः स्वः । कया नश्चित्र आभुव-
३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
दूती सदा वृधः सखा । कया शचिष्ठया
३ २ १ २ ३ १र
वृता ॥ १ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः । कस्त्वा सत्यो
२र ३ १ २ ३ १ २ १ २ २ ३२ ३
मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढा चिदारुजे
१ २ ३ २ ३
वसु ॥ २ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः । अभी षु णः
२ ३ २ ३ २ ३ १ ३
सखीनामविता जरितॄणाम् । शतम्भवास्यू-

तये ॥ ३ ॥ महावामदेव्यम् ॥ काऽ४या ।
नश्चाऽ२इ्आऽ३ऽ आभुवात् । ऊ । ती
सदावृधः सा खा । औऽ३होहाइ । कया
ऽ२३ शचाइ । ष्ठयौहोऽ३हुम्माऽ२ । वाऽ२तोऽ३५-
हाइ ॥ (१) ॥ काऽ५ स्त्वा । सत्योऽ३माऽ३-
दानाम् । मा । हिष्ठोमात्सादन्ध । सा । ओऽ३
होहाइ । दृढाऽ२३ चिदा । रुजौहोऽ३ ।,हुम्माऽ२
वाऽ३सोऽ३५हाइ ॥ (२) ॥ आऽ५ भी ।
षु णाऽ३ः साऽ३खीनाम् । आ विता जरायितृ ।
णाम् । औऽ२३ हो हाइ । शताऽ२३म्भवा ।
सियौहोऽ३ । हुम्माऽ२ । ताऽ२ योऽ३ऽ५ हाइ
॥ (३) ॥ साम० उत्तरार्चिके । अध्याये १ ।
खं० १ । मं० १,२,३ ॥

आरती

(१)

जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का ॥
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किस की ? ।
तुम बिन और न कोई, आस करूं जिस की ॥
तुम सर्वज्ञ सुदेवा, तुम अन्तर्यामी ।
परम ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालक मेरे ।
हम मूरख अज्ञानी, हैं बालक तेरे ॥
तुम हो अलख अगोचर, सबके प्राणपती ।
किस विधि मिलूँ दयामय तुम से मैं कुमती ॥

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥
विषय-विकार मिटाओ, हे मङ्गल देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सुजनों की सेवा ॥

---

(२)

जय जगदीश दयामय, जय त्रिभुवनकर्ता ।
सब के आश्रय-दाता भय-संकट-हर्ता ॥
जड़, चेतन सब तेरी विरदावलि गावें ।
राव, रङ्क, नर, नारी सब तुझ को ध्यावें ॥
अतुल तुम्हारी, महिमा, बरनी नहिं जाई ।
मङ्गल-ज्योति तुम्हारी, भू-नभ पर छाई ॥
तुम करुणामय ईश्वर, सब जग के स्वामी ।
घट-घट में हो व्यापक, तुम अन्तर्यामी ॥

ज्ञान-सुधा बरसाओ पाप हरो सारे।
तुम हो तारन हार, अधमाधम तारे॥
हे प्रभु! अपनी भक्ति अरु आश्रय दीजे।
मोह मदादिक मेटो, अब अपना लीजे॥
इच्छा यही हमारी, हे व्यापक देवा।
भक्ति भाव से पूजें, सतत करें सेवा॥

राष्ट्रीय-गीत

आर्यावर्त

परम-सुहावन, हृदय लुभावन,
मन-भावन, हितकारी है।
इस भूतल पर सर्वोपरि वह
जननी भूमि हमारी है॥

पैंतिस कोटि प्रजा का पालन
जिस वसुधा से होता है।
उस की सेवा का शुभ अवसर
व्यर्थ भला क्यों खोता है॥

जो डूबा था अन्धकूप में
वह प्रकाश में आया है।
समय-चक्र ने पलटा खाकर
कैसा रूप दिखाया है।

जिस धरणी पर दयानन्द ने
वैदिक धर्म प्रचार किया।
गाँधी ने जिस की रग-रग में
बल-विक्रम संचार किया॥

आओ शुद्ध गिरा से इसकी
गौरव-गाथा गान करें।

उसकी मञ्जु मूर्ति का मन में
तन्मय होकर ध्यान धरें ॥
जन्मभूमि के बन्धन काटें
सत्य अहिंसा के द्वारा ।
हो स्वतन्त्र वह देश हमारा
जो सब देशों से न्यारा ॥
जिस की रक्षा हिमगिरि करता
सागर पद रज धोता है ।
हाय ! उसी की घोर दुर्दशा
देख "भवानी" रोता है ॥

हिन्द

जगदीश का दुलारा वह हिन्द है हमारा ।
शुचि शस्य-श्यामला पर है मुग्ध विश्व सारा ॥

जहँ ब्रह्मपुत्र, सिन्धू और शोण-सी नदी है।
बहती जहाँ है गङ्गा की शुद्ध शुभ्र धारा॥
गाते थे आर्य जहँ पर ऋग्वेद की ऋचाएँ।
दे ज्ञान-दान जिस ने संसार को सुधारा॥
प्रह्लाद, ध्रुव ने जिस की गोदी में जन्म पाया।
हरिचन्द ने जहाँ पर सौरभ सुयश पसारा॥
दशरथ, दिलीप, रघु ने ध्रुव धर्म को निबाहा।
भगवान राम ने भी संकट विकट निवारा॥
गोतम सा ज्ञानधारी वो पाणिनी सा पंडित।
वाल्मीकि, व्यास का वह साहित्य काव्य सारा॥
पातञ्जली सा योगी, भीषम सा ब्रह्मचारी।
सीता, सती की गाथा, अनमोल धन हमारा॥
श्रीकृष्ण ने जहाँ पर मुरली मधुर बजा कर।
संसार को छकाया गीता के ज्ञान द्वारा॥

श्री बुद्ध ने अहिंसा का धर्म ज्ञान देकर।
जापान, चीन, लङ्का को गर्त्त से उबारा॥
दयानन्द और गाँधी का जो है जन्मदाता।
चमकेगा फिर भी निश्चय उस देश का सितारा॥
दिन फिर रहे हमारे, भगवान् की दया से।
स्वाधीनता "भवानी" का मूलमंत्र प्यारा॥

काल-चक्र

जगदीश! यह बता दो क्या भाग्य में बदा है।
क्या दासता नरक में सड़ना हमें सदा है॥
परदेशियों ने जब से आकर किया बसेरा।
सौभाग्य-सूर्य्य डूबा बदक़िस्मती ने घेरा॥
हा! पूर्वजों की कृतियाँ साहित्य जो पुराना।
भट्ठी में जल गया सब वह ज्ञान का ख़ज़ाना॥

मुक्तामणी से जिस को थे आर्य गण सजाते।
टूटे हुए पुराने खँडहर वहां दिखाते॥
दर-दर भटक रहे हैं कैसी विचित्र माया।
वह घर उजड़ गया है, मेरा बसा बसाया॥
भगवान का नियम है दिन एकसे न जाते।
दुःख-सुख के चक्र को वे रहते सदा चलाते॥
युग-धर्म की हवा ने झकझोर कर उठाया।
फिर आत्म-बल-प्रवर्धक शुभ काल ने जगाया॥
संसार का बनेगा भारत गुरु दोबारा।
निश्चय हमारी नैया लग जायगी किनारा॥
हिय-क्षेत्र में बहेगी फिर देश-प्रेम-धारा।
बज जायगा "भवानी" डंका जहान् सारा॥

पर अब हवा है बदली अनुकूल काल आया ।
गाँधी का त्याग तप है क्या खूब रङ्ग लाया ।
जो स्वार्थ में सने थे बन अर्थ के पुजारी ।
मल-मल के हाथ रोते अब धर्म के मदारी ॥
गाँधी के घोर व्रत ने संसार को कँपाया ।
जड़ता की भावना को जड़ मूल से हिलाया ॥
समता की चाहना है आवे वही ज़माना ।
फिर मस्त हो "भवानी" गावे मधुर तराना ॥

आवाहन

भारत के वीर ! जागो देखो हुआ उजाला ।
यह प्राण-प्रद पवन का झोंका चला निराला ॥
नैराश्य की निशा अब भारत से जा रही है ।
आशा उषा की कैसी लाली दिखा रही है ॥

भय भूत आज सरपट मैदान छोड़ भागा।
नस-नस में वीर रस का फिर भव्य भाव जागा॥
दयानन्द और गाँधी नव-युग सन्देश लाये।
संजीवनी पिलाकर मुर्दों को भी जिलाये॥
सब देश के हितैषी हैं देश-हित दिवाना।
तब क्या हमें उचित है यों मौज का उड़ाना॥
भारत के प्रेम-सागर में मस्त हो नहाना।
निज पूर्वजों का हमको यदि नाम है चलाना॥
वह हथकड़ी की झन-झन बन्दी का वीर बाना।
भारत की यज्ञ-वेदी पर शीश को चढ़ाना॥
बलिदान भावना से भारत स्वतन्त्र होगा।
पुलकित हृदय "भवानी" पहनेगा वीर चोग़ा॥

अन्तिम अभिलाषा

प्राणेश ! याचना है जब प्राण तन से निकले ॥
प्रिय 'ओम् ओम्' भजते यह जान तन से निकले ॥
वैदिक ऋचाएँ रटते, शुचि यज्ञ-होम करते ।
सर्वेश को सुमिरते यह प्राण तन से निकले ॥
संसार के किसी भी कोने में उस घड़ी हों ।
पर 'हिन्द-हिन्द' जपते यह जान तन से निकले ॥
भाई जो हैं हमारे आपत्तियों के मारे ।
उन के दरिद्र दलते यह प्राण तन से निकले ॥
ऊँचा न कोई नीचा, सब का समान हक़ है ।
यह भाव जब उदय हों तब जान तन से निकले ॥
सुख-सुर सदा सुहावे, दुःख-दैत्य भाग जावे ।
सन्तुष्ट हो—मगन मन जब प्राण तन से निकले ॥
भारत का ध्यान धरते, राष्ट्रीय गान करते ।
जय जयति देश रटते यह जान तन से निकले ॥

यह माँगता "भवानी" तुम से उदार दानी ।
स्वातन्त्र्य-साम्य युग में यह प्राण तन से निकले ॥

उलहना

दयामय नाम धारण कर दया तुमने बिसारी है ।
तुम्हारे द्वार पर कैसी लगी यह भीड़ भारी है ॥
कोई रोते-बिलखते भर रहे हैं सर्द आहों को ।
तुम्हें ही ढूँढते हैं, देख लो, कैसे दुखारी हैं ॥
अरे उस हिन्द को देखो जो भू पर स्वर्ग था पहले ।
व्यथा से बिलबिलाता है, नरक का दृश्य जारी है ॥
जहाँ पर वेदमन्त्रों की मधुर गुंजार होती थी ।
वहाँ पर हाय होता आज हाहाकार भारी है ॥
जहाँ की हाँक से संसार थर-थर काँप जाता था ।
वहाँ पर दासता दानव जमाया रोब भारी है ॥

विदेशों में निरन्तर हम कुली काले कहाते हैं।
अविद्या की अँधेरी ने बिगाड़ी बात सारी है॥
टिकेंगे पैर अब कैसे भला जग के झपाटे में।
"भवानी" को बता दीजे यही बिनती हमारी है॥

ईश-विनय

दयानिधि ! भारत को अपनाओ॥

इस अज्ञान-अँधेरी रजनी को अब वेगि नसाओ॥
अपनी चरण-शरण में लेकर ज्ञान-सुधा बरसाओ॥
हे विश्वेश ! मातृभू के सब संकट क्लेश मिटाओ।
विद्या बल वैभव से उसकी फिर काया पलटाओ॥
समता के सद्भाव जगाकर हृदय पवित्र बनाओ।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर एकाकार कराओ॥
जननी जन्म भूमि की संतति हैं हमको समझाओ।
भाई से भाई का भगवन् ! भरत मिलाप कराओ॥

दुख से दग्ध हुआ है भारत, सुख समीर सरसाओ।
भक्त "भवानी" की विनती सुन नाथ! दया कर धाओ॥

मातृभूमि

मन! तू कर ले मा का ध्यान॥
हिमगिरि सिरपर चँवर करे, पग धोवे उदधि महान।
गङ्गा की जहँ निर्मल धारा करती कल-कल गान॥
फल फूलों की विशद वाटिका, विविध धातु की खान।
उसी अन्नपूर्णा जननी की छेड़ें गौरव-तान॥
छोड़ें देशद्रोह, कायरता, ऊँच-नीच अभिमान।
हम सब मातृ भूमि के बालक विचरें एक समान॥
जिसने पाल पोष कर हमको दिया कर्म का ज्ञान।
हे भगवान्! उसी वसुधा हित हो जावें बलिदान॥
माता तुम वात्सल्यमयी हो हम कपूत अज्ञान।
बसो "भवानी" के उर-अन्तर माँगत यह बरदान॥

धिक्कार

वृथा ज़िन्दगी हाय हमारी ॥

सदियों से भारत वसुधा की हो रही दुर्गति भारी ।
सिसक-सिसक कर रोती हैं वह ऋषियों की महतारी ॥
कहाँ गये वे राम देश के क्लेश विषाद-निवारी ।
कहाँ गई मोहन की मुरली सुख सरसावन हारी ॥
कहाँ गये वे भीम, द्रोण, अर्जुन अपूर्व धनुधारी ।
कहाँ गये वे बुद्ध, दयानन्द भारत के हितकारी ॥
उनकी सन्तति होकर भी हम बने गुलाम भिखारी ।
लाज नहीं आती है हमको हुआ पतन अति भारी ॥
अब तो एक आश गाँधी की जो है सत्य-पुजारी ।
दया "भवानी" पै करि लाओ युग वह मङ्गलकारी ॥

भारत-वन्दना

भज ले भारत-मात भवानी ॥

जिस की मूर्ति हृदय में बसती, गाती गौरव वानी ।
उस भारत की वरद्-वन्दना करो जोड़ युग-पानी ॥
हे कमले ! हे अमले । अचले ! हे भारत-महरानी !
तेरी प्रतिमा को हम पूजें मुद-मङ्गलमयजानी ॥
स्वर्ग तुच्छ है तेरे सम्मुख तू सब सुख की खानी ।
इतिहासों के पन्ने कहते तेरी कीर्त्ति-कहानी ॥
प्यारी राष्ट्र-पताका ऊँची रहे स्वतन्त्र निशानी ।
बन्धन मुक्त करूंगा जननी ! यही ठान मन ठानी ॥
तेरी सेवा की वेदी पर हो मेरी कुरबानी ।
बार बार माँगत है तुझ से यह वर-दान 'भवानी '॥

राष्ट्रीय-ध्वज-गीत

(इण्डियन नेशनल काँग्रेस द्वारा स्वीकृत)

विजयी-विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा ॥ ध्रुव ॥

सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृभूमि का तन मन सारा ॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लख कर बढ़े जोश क्षण २ में ।
कांपे शत्रु देखकर मन में,
मिटजाये भय संकट सारा ॥

इस झंडे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता ही ध्येय हमारा ॥

आओ प्यारे वीरो ! आओ,
देश धर्म पर बलि १ जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥

इस की शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावें,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥

आर्य-ध्वज-गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम-विहारी ।
विश्व-प्रेम-प्रतिमा अति प्यारी ॥

सत्य-सुधा बरसाने वाला,
स्नेह-लता सरसाने वाला ।
साम्य सुमन विकसाने वाला,
विश्व विमोहक भवभय-हारी ॥

इस के नीचे बढ़ें अभय मन,
सत्पथ पर सब धर्म-धुरी जन ।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन,
आलोकित होवें दिशि सारी ॥

इससे सारे क्लेश शमन हों,
दुर्मति-दानव द्वेष दमन हों ।

अति उज्ज्वल, अति पावन मन हों,
प्रेम-तरंग बहै सुखकारी ॥

इसी ध्वजा के नीचे आकर,
ऊँच-नीच का भेद भुला कर ।
मिले विश्व मुद-मंगल गाकर,
पन्थाई पाखंड बिसारी ॥

इस ध्वज को लेकर हम कर में,
भरदें वेद-ज्ञान घर-घर में ।
सुभग शान्ति फैले जगभर में,
मिटे अविद्या की अँधियारी ॥

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें,
सत्य अहिंसा को अपनावें ।

जग में जीवन-ज्योति जगावें,
त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी ॥

आर्य जाति का सुयश अछय हो,
आर्य ध्वजा की अविचल जय हो
आर्य-जनों का ध्रुव निश्चय हो,
आर्य बनावें वसुधा सारी ॥

इति

BHAWANI DAYAL SANNYASI

A Public Worker of South Africa

By

PREM NARAIN AGRAWAL M. A.

'This book is a description of the life and work of Swami Bhawani Dayal Sannyasi, whose work in the cause of Indians in South Africa is second only to Gandhiji's The book merits study not only for its account of a great and courageous man, but also for the insight it provides into the travails of our countrymen abroad'.

—*Hindu*, Madras.

'The young and public-spirited author of this book deserves to be congratulated by every patriotic Indian on his useful contribution to the biographical literature in India of which there is a deplorable dearth Dr Rajendra Prasad, President of the Indian National Congress expresses his belief, in the course of an appreciation. "That Swamiji's biography should be an inspiration to the youths in moulding their lives, and his sacrifices, services, activities and patriotism should ever serve as an ideal and guide to them.' The book also contains rare tributes from Mr Hy S. H.-Polak, Mr C F Andrews and Kunwar Sir Maharaj Singh C I E It is to be earnestly hoped that the book will arouse greater interest in the work and personality of the Swami as well as the affairs of twenty five lakhs of our brothers and sisters settled abroad.'

—*Leader*, Allahabad.

'The author has done a great service to his contrymen by bringing out in print the various phases of the life of one who has dedicated his existence to the cause of his country Indians should draw inspiration from the life of Swami '

—*Amrita Bazar Patrika*, Calcutta.

'The book contains copious extracts from numerous journals in South Africa and India which gives an idea of the nature of the struggle in which Swamiji was engaged and the part played by him. Swami Bhawani Dayal is only 47 now and is actively connected with the Congress work in South Africa. The racial discrimination pursued to the extremes by the South African Government and the serious disabilities to which our countrymen are subjected in South Africa have stirred indignation of the people of this country, and the future of our countrymen there is as yet far from being rosy The responsibility cast on those in the charge of the Congress affairs in South Africa at this critical hour is great, and India will watch not only with interest but with anxiety the future developments in that continent Swami Bhawani Dayal will have a prominent part to play in shaping the future course of action to be pursued by the Indian Community in South Africa '

—*Hindustan Times*, New Delhi.

'With an admirable simplicity, straight-forwardness, and selectively, the author of this book has narrated the life-story of Bhawani Dayal Sannyasi a public worker of South Afrira Swamiji's

activities were manifold, he was a propagandist, a political worker, a social reformer, and above all this, stands his work as an Aryan Missionary, and as a propagator of Hindi The perusal of this work suggests that Sannyasa is not renunciation, but is activity—intense activity. For those who desire to discharge their debt of gratitude towards Indian propagandists who explored into far and wide countries, this book is a priceless treasure.'

—*The Mahratta*, Poona.

'Swami Bhawani Dayal Sannyasi is a colonial-born Indian who has spent the major part of his life in the service of his countrymen abroad. Indians settled in South and East Africa, in Dutch and British Guiana, Trinidad Fiji, and Mauritius, have borne testimony to his unwearying service on their behalf The Sannyasi came to India few months ago to awaken the Indian public as well as the Government of India to a realisation of the great crisis that is impending in South Africa following the interim legislation discriminating against Indians In this task he has succeeded to a great extent as is evident from the stir created in this country against that obnoxious measure Mr Prem Narain Agrawal has thus an interesting subject for his study and his book *Bhawani Dayal Sannyasi* on the Swami is an eloquent and discriminating account of his life and achievements of a great public worker It is a record of a remarkable career of usefulness and public service and throws light on the varied activities of the Swami, who is also rightly esteemed as an example

of high-minded patriotism and devoted service to India.'

—*Indian Review*, Madras

'The history of Bhawani Dayal Sannyasi is the history of Indians in South Africa, which in its turn is a story of inhuman sufferings It can be said without any exaggeration that Mr. P N Agrawal has done full justice to the subject in all its bearings The book has got a value which is as much lively as it is urgent.'

—*Hindu Outlook*, New Delhi.

'The author studies in this book the great personality of Swamiji from close quarters and gives details concerning the great and noble work that he is doing for his countrymen overseas The book should attract the attention of the Indian public '

—*United India and Indian States*, New Delhi.

'Bhawani Dayal Sannyasi which is the formal title of the book and the formal name of the hero is very well known both on this side as well as on other side of the Indian Ocean. He is one of the most remarkable figures thrown up by the modern Indian movement The young author therefore, deserves commendation for his really splendidly executed effort and we are sure that all those who are interested in the Indian renaissance and the Indian march towards freedom will make it a point to purchase a volume Though English is not the author's language, the style is easy and does not suffer from the usual blemishes of Indian type '

—*Tanganyika Opinion*, Dares-Salaam.

'The Indian public in the course of the agitation to stop the drain of the indentured emigrants from India, had come to regard the system as so utterly bad that it could not imagine any one born and brought up there, developing qualities of leadership not merely in the politics but also in the social and religious life of the community Bhawani Dayal Sannyasi's career brings into relief the inherent capacity of the Indian community of South Africa to produce original types independently of influences from Mother-country '

—*Zanzibar Voice*, Zanzibar

'Swami Bhawani Dayal has been connected with the Indian struggle in South Africa now for over a quarter of a century, so much that his biography becomes a history of that struggle The Indian case in South Africa is stated in this book in very clear terms The young writer is interested in the affairs of Indians overseas from the beginning of his journalistic career and he deserves our congratulations.'

--*The Colonial Review*, Nairobi.

'Swami Bhawani Dayal, whose life and work this volume embraces, need no introdution to Indians in South Africa As a conscientious public worker, the Swamiji stands among the first rank of those who have dedicated their lives for the laudable task of bettering the lot of their countrymen in India and abroad The book under review is a finely bound volume of 220 pages, written in a pleasing style and illustrated It should be keenly

read by Indians at home and abroad, for it is not merely a biographical study of a well known public figure but contains valuable and important historical information '

--*Indian Views*, Durban Natal.

'His indeed a noble and inspiring life and it is no doubt as a tribute for his eminent services that the Indian Colonial Association proclaiming him a national worker and a builder of Greater India, has brought out an illustrated life story of his concatenated with a record of his achievement. No better homage can be offered to him Written in a clear and natural style, the biography of Swami Bhawani Dayal Sannyasi affords easy and valuable reading It is but a brilliant and useful piece of work on the life of a man who is today the pride of South Africa The author Mr Prem Narain Agrawal, M A (the active secretary of the Indian Colonial Association) deserves our warmest congratulations No other pen than he can write so authoritatively of Swamiji He carries us from Swamiji's early life, all along his strenuous struggle for his plighted countrymen, to every walk in his life and gives us into the bargain a splendid sketch of the patriotic life of his late wife Mrs. Jagrani Devi. Appreciations from eminent sons of India enrich the book In fact the biography of Swami Bhawani Dayal commends itself to the book-case of every son of Greater India.'

—*Arya Vir*, Mauritius

'This work is of astounding value on and will be allotted a due place in the annals of Indian struggle against the forces of imperialism The book ably and fully depicts all these aspects and characteristics of Swami Bhawani Dayal, and will be source of invaluable inspiration to rising Indians at whose heart is burning the cause of India Besides it has a lesson for the grown-ups too, in that it teaches them how, despite senility, go right ahead with their mission and objective in life We, therefore, strongly advice our people to read the biography of our great national worker who has dedicated his life to the services of his people '

—*Tanganyika Herald*, Dares-Salaam.

'This is an able biography of a great colonial leader Swami Bhawani Dayal is a distinguished Indian leader in South Africa, and has done great service to his countrymen. His biographer has given us a careful, detailed account of his life and career It is a worthy record of the work of one of the builders of greater India '

—*Federated India*, Madras.

—:o:—

प्रवासी की कहानी।

भूमिका लेखक – राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद।

कथाकार—स्वामी भवानीदयाल संन्यासी।

चरित लेखक—ठाकुर राजबहादुर सिंह।

यह पुस्तक स्वामी भवानीदयाल की आत्मकथा है जो हाल ही में कलकत्ता पुस्तक भण्डार द्वारा प्रकाशित हुई है। जिन्होंने श्री प्रेमनारायण अग्रवाल एम. ए. लिखित स्वामीजी का अंग्रेजी जीवन चरित्र पढ़ा है उन्हें भी इस ग्रंथ के पाठ से वंचित नहीं रहना चाहिये क्योंकि इस में स्वामीजी की कहानी उन्ही की जबानी सुनने को मिलेगी। यह ग्रंथ ऐसी घटनाओं से परिपूर्ण है कि इसे पढ़कर उपन्यास, यात्रा-विवरण संस्मरण, भूगोल और इतिहास का आनन्द एक साथ ही प्राप्त होगा। भाषा ऐसी सरल और सुबोध है, भाव ऐसे भव्य और हृदयग्राही हैं तथा विवेचन-पद्धति इतनी सुन्दर और सरल है कि पुस्तक एक वार शुरू करने पर अन्त तक पढ़े बिना चैन नहीं मिल सकता।

यह स्वामी जी की केवल आत्मकथा ही नहीं है—वास्तव में भारत और बृहत्तर भारत का एक अनुपम चित्र है।

हिन्दी के २८० पृष्ठ का यह ग्रंथ सजिल्द और सचित्र है। छपाई सफ़ाई का क्या कहना? कवर आकर्षक और रंग-रूप मनमोहक है। मूल्य केवल छः शिलिंग छः पेनी। मिलने का पता—

R. B. DAYAL,
"Bhawani-Bhawan", JACOBS,
Natal, South Africa.

—:o:—

प्रवासी-प्रपंच ।

लेखक—ब्रह्मदत्त भवानी दयाल ।

भूमिका लेखक—श्री शिवपूजन सहायजी

यह एक उपन्यास है जिसमें बृहत्तर भारत की सामाजिक अवस्था की एक झलक दृष्टिगोचर होती है। लेखक की कहानियों का हिन्दी संसार में जो आदर और सम्मान हुआ है उसी के प्रोत्साहन और प्रेरणा-का यह फल है। लेखक की यह कृति हिन्दी साहित्य में एक अमूल्य अभिवृद्धि है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक और सम्पादक श्री शिवपूजन सहायजी ने भूमिका लिखकर इसका महत्व और भी बढ़ा दिया है। इस में प्रवासी भाइयों की दशा का ऐसा दिव्य दिग्दर्शन है कि पढ़कर रोम रोम फड़क उठता है। भाषा, भाव और बोली में यह उपन्यास प्रवासी साहित्य में अपना जोड़ नहीं रखता। पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। मिलने का पता—

R. B. DAYAL.
"Bhawani-Bhawan", JACOBS,
Natal, South Africa.